राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केंद्र, भुवनेश्वर

हिंदी कार्यशाला 07/12/2023 : एक रिपोर्ट

देश की राजभाषा नीति के नियमानुसार सभी सरकारी कार्यालयों में देवनागरी हिंदी में काम करना अनिवार्य किया गया है और हिंदी कार्य में आनेवाली कठिनाई झिझक,शंका ,आशकाओं को दूर करने के लिए प्रत्येक तिमाही में एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन करना अनिवार्य है। इस उद्देश्य को अमल में लाने हेतु राष्ट्रीय सूचना -विज्ञान केंद्र ,भुवनेश्वर में वर्ष **2023** की

चौथी तिमाही कार्यशाला का आयोजन दिनांक **07/12/2022** को अपरान्ह **3.30** बजे राज्य सूचना -विज्ञान अधिकारी**(SIO)** डॉ श्री अशोक कुमार होता की अध्यक्षता में किया गया ।

इस कार्यशाला में जिलाधिकारियों ने भी **VC** के माध्यम से भाग लिया। कार्यशाला में बतौर मुख्य अतिथि भुवनेश्वर के श्री नारायण प्रसाद सर उपस्थित थे । श्री नारायण प्रसाद सर पेशे से एक चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं, इसके साथ साथ भगवद गीता चिंतन के बहुत बड़े ज्ञाता हैं। इस बार कार्यशाला का विषय कुछ आध्यात्मिक विचार से लिया गया।

कार्यशाला का विषय: "भगवद गीता से जीवन प्रबंधन कौशल"

कार्यशाला का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं वंदना से हुआ

मुख्य अतिथि महोदय को साप्लिंग प्रदान करते हुए स्वागत

सभी उपस्थित प्रतिभागी,मुख्य अतिथि तथा जिलाधिकारियों का स्वागत करते हुए सुश्री अलका प्रधान ने कहा कि मनुष्य जीवन उतार-चढ़ाव भरा होता है, और इसी उतार-चढ़ाव भरी जिंदगी में संतुलन बनाए रखने के लिए भगवद गीता ही एक ऐसा ग्रंथ है, जो इंसान को हर कठिनाई का सकारात्मक रूप से सामना करते हुए आगे बढ़ने का मनोबल देता है।

राज्य सूचना –विज्ञान अधिकारी(SIO) मोहदय का वक्तव्य

मुख्य अतिथि एवं उपस्थित पदाधिकारियों का पुनः स्वागत करते हुए अपने वक्तव्य में **SIO** महोदय डॉ श्री अशोक कुमार होता ने कहा कि मनुष्य जीवन कभी खुश तो कभी विषादग्रस्त होता है, कार्यालय में भी काम के चलते हम कभी कभी तनावग्रस्त होते हैं, जीवन के इस आपा-धापी में हम सबको राह दिखाने का काम भगवद गीता ही करती है। इसलिए हमें अपने दिनचर्या से थोड़े समय निकाल कर भगवद गीता का कोई भी अध्याय पाठ करना चाहिए, और इसमें दिये गए उपदेश को अपने जीवन में उतारना चाहिए।

राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केंद्र ,भुवनेश्वर की मासिक पत्रिका "द एसेंडर" का हिन्दी –अंग्रेजी संसक्रण का उन्मोचन भी मुख्य अतिथि, SIO के कर कमल से हुआ।

मुख्य अतिथि महोदय का वक्तव्य

मुख्य अतिथि श्री नारायण प्रसाद सर ने अत्यंत सरल और सहज भाषा में गीता के कई उपदेशों को उदाहरण के साथ समझाया। उन्होंने आगे कहा कि हमारे सारे दुख का कारण ही हमारा कर्मफल से ज्यादा जुड़ा होना होता है, जबकि हमारे हाथ में सिर्फ और सिर्फ कर्म करना ही है, फल तो कोई और देता है, इसलिए हमें पूरी निष्ठा , कर्तव्यबोध तथा प्रतिबद्धता के साथ कर्म पर ध्यान देना चाहिए न कि काम से पहले उसके अंजाम पर। मुख्य अतिथि श्री नारायण प्रसाद सर महोदय ने अपने वक्तव्य के अंत में प्रतिभागियों के कई प्रश्नों का उत्तर भी बड़ी सरलता से रखा।

ए एस आई ओ महोदय द्वारा सम्माननीय अतिथि महोदय को स्मृति फलक प्रदान

कार्यशाला में उपस्थित अधिकारीगण

कार्यक्रम के अंत में भगवद गीता पर एक छोटा सा प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम भी रखा गया था, जिसे ओएलआईसी की उपाध्यक्षा श्रीमती सुजाता दास ने संचालित किया। सही जवाब देने वाले प्रतिभागियों को भगवद चिंतन से संबन्धित छोटी छोटी कि ताब तथा अन्य छोटे उपहार से सम्मानित किया गया।

अंत में उपध्यक्षा श्रीमती सुजाता दास ने मुख्य अतिथि तथा उपस्थित पदाधिकारियों को धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला का सत्र सम्पन्न हुआ।